"सृजन से विलय तक" - एक विहंगम दृष्टि

1. नाद ब्रह्म :– सृष्टि रचना पर भिन्न भिन्न विद्वानों के भिन्न भिन्न मत हैं फिर भी विज्ञान के मत को वैदिक मत के साथ जोड़ कर देखने से स्थिति बहुत कुछ तर्क युक्त लगती है। कुछ ऋषियों का विचार है, कि सर्वप्रथम शब्द था और शब्द ब्रह्म के साथ था और शब्द ही ब्रह्म था। चूँकि शब्द आकाश का गुण है अतएव यह बतलाया गया कि शब्द से ही सृष्टि का निर्माण हुआ। चूँकि आकाश सनातन है इसलिए इसे परमतत्व भी कहा गया है। परन्तु सृष्टि में शब्द के अतिरिक्त प्रकाश भी बहुतायत में दिखलायी पड़ता है जो सीधे-सीधे "शब्द" से उत्पन्न होता हुआ तर्क सम्मत नहीं लगता। इस विचार वाले ऋषि का यह भी मानना है, कि सर्वप्रथम "नाद" था और नाद ही ब्रह्म है। "नाद" की "शोर" के अतिरिक्त और लचीली परिभाषा बनाने पर कुछ तर्क सम्मत अर्थ नहीं बनता। कुछ भी हो, यह अर्थ अधूरा लगता है। नहीं तो प्रश्न उठता है, कि फिर इतना विशाल प्रकाश कहाँ से आया ? आइए निम्न पंक्तियों में सृष्टि रचना सम्बन्धी विभिन्न मतो पर दृष्टि डालें।

2. परमात्मा से हिरण्यगर्भ तक :– सर्वप्रथम परमात्मा था, जो अजन्मा है। जब वह शान्त अवस्था में था, तब सृष्टि की सुप्तावस्था थी। तब आकाश तत्व भी था तथा परमात्मा आकाश तत्व को आच्छादित किए हुए स्थित था। परमात्मा एक चेतन तत्व है और सत् चित् एवम् आनन्द के गुणों से युक्त है। आकाश जड़ तत्व है तथा परमात्मा का चित्त है परन्तु परमात्मा की भाँति ही सनातन है। परमात्मा अपनी सुप्तावस्था से जागृत होकर सृष्टि के निर्माण की इच्छा से "एकोऽहम् बहुस्याम:" के संकल्प के आधार पर सृष्टि निर्माण के लिए उद्यत हुआ। तब परमात्मा के चित्त (आकाश) में हलचल हुई अर्थात् कम्पन आरम्भ हुए। अधिक उपयुक्त कहा जाए, कि तब परमात्मा अपने स्तर से नीचे परब्रह्म बना और तब उसमें हुई हलचल के कारण त्रिगुणमयी माया (सत+रज+तम अथवा आल्फा+बीटा+गामा) की चुम्बकीय विद्युत तरंगें हरकत में आ गयीं। ये तरंगे जो आकाश तत्व अर्थात् परमात्मा के चित्त में पहले से ही सुप्तावस्था में विद्यमान थीं, परमात्मा के संकल्प के कारण क्रियाशील हो उठीं। यह हलचल परब्रह्म के मन में हुई, जिसके परिणामस्वरूप एक बहुत महान पवन उठा और तब आकाश में बहुत ही विशालकाय धूल एवम् मिट्टी का घटाटोप (बादल) छा गया। इस महान पवन को मातरिश्वा कहा गया। यह धूल-मिट्टी का घटाटोप बादल कर्षण शक्ति (Gravitational force) के कारण सिकुड़ने लगा और सिकुड़ते-सिकुड़ते एक अति भीमकाय गोला अथवा जैसे स्त्री के बच्चेदानी में अण्डा (Ova) होता है उसी प्रकार हिरण्यगर्भ बन गया, जिसे विज्ञान के शब्दों में नेबुला कहा गया। तत्पश्चात् जिस प्रकार पुरुष वीर्य का कीट (Sperm) अण्डा (ova) में घुसता है, उसी प्रकार भगवान वासुदेव (परब्रह्म के चित्त) ने उस गर्भ में 43,200 वर्षों तक घुस कर वास किया। इस प्रकार वह हिरण्यगर्भ पका। जिस प्रकार बच्चा पैदा होते समय माँ के मस्तिष्क (Brain) से विद्युत संकेत (Signal) बच्चेदानी तक जाते हैं और गर्भ की झिल्ली को फाड़ते हैं, उसी प्रकार इन्द्र अर्थात् परब्रह्म के मस्तिष्क ने वज्र (विद्युत तरंग) का प्रहार किया और वह फटा। उस हिरण्यगर्भ के फटने से करोड़ों आकाश गंगाऐं निकल पड़ीं और कोटि-कोटि अणु-परमाणुओं का जन्म हुआ तथा अभूतपूर्व विकीरण भी हुआ।

3. नादब्रह्म (ॐ) की उत्पत्ति :– उस हिरण्यगर्भ के फटने से एक भारी नाद हुआ जिसे विज्ञान के शब्दों में Big Bang कहा जाता है। उस वज्र की चोट के धक्के से गर्भ में से जो पदार्थ निकला वह 20,000 मील प्रति सेकण्ड की गति से दौड़ने लगा। चूँकि आकाश में शून्यता है अतएव प्रतिरोध के अभाव में वह सारी की सारी आकाश गंगाऐं अरबों खरबों वर्षों के उपरान्त भी उसी गति से दौड़ी चली जा रही हैं। मजेदार बात यह है, कि कोई हवा नहीं, चोट नहीं और न ही कोई प्रतिरोध या रगड़, फिर भी लगतार "ॐ" की ध्वनि उत्पन्न हो रही है और वह ध्वनि ऋषियों ने समाधी अवस्था में सुनी और इस ध्वनि को उन्होंने एक स्वर से ईश्वर का नाम स्वीकृत कर लिया (ॐ इति एकाक्षरम् ब्रह्म-गीता-8/13) इस ध्वनि को इसीलिए उन्होंने 'अनाहद' कहा। अनाहद का अर्थ है ऐसी ध्वनि जो बिना चोट के पैदा हो रही हो।

4. प्रणव का सृजन :– दूसरी बात एक और हुई कि आकाश गंगाओं के दौड़ने से जो Kinetic energy पैदा हो रही है, वह इतनी अपरिमित है कि उस शक्ति से पूरे विश्व (Cosmos) में रहने वाले सम्पूर्ण प्राणी जगत की शक्ति-व्यय का संतुलन कर सकना सम्भव हो रहा है। इसीलिए इस "ॐ" को "प्रणव" प्राण का वपु - अर्थात् शक्ति का भण्डार कहा है। ये सारी की सारी आकाश गंगाऐं जो एक मोटे अनुमान से लगभग दस अरब हैं, एक विशिष्ट चक्र अथवा अयन में चक्कर लगा रही हैं। विराट विश्व (Cosmos) के बारे में आइंस्टीन ने गणित करके बतलाया है, कि इसका विस्तार लगभग 350 (तीन सौ पचास) अरब प्रकाश वर्ष है।

5. हमारी आकाश गंगा :– हर आकाश गंगा में करोड़ों सूर्य तथा कोटि कोटि अणु-परमाणु, ग्रह, पृथ्वी आदि क्या कुछ नहीं हैं। हमारी आकाश गंगा में ही अनुमान है, कि एक खरब सूर्य हैं और सम्भव है, कि हमारे सूर्य की भाँति ही अनेकानेक सूर्य अपने भरे-पूरे परिवार वाले हों और बहुत से एकांकी भी हों जो कई सूर्यों के समूह अर्थात् नक्षत्रों एवम् राशियों के रूप में हमारे जीवन को प्रभावित करने का कार्य भी करते हों। हमारी आकाश गंगा में सत्ताइस ज्ञात नक्षत्र हैं तथा बारह राशियाँ भी हैं। ये सभी के सभी बहुत बड़े-बड़े सूर्य हैं और उनमें से अनेक तो हमारे सूर्य से बीस गुना से लेकर पाँच हजार गुना तक बड़े हैं। हमारी आकाश गंगा के केन्द्र में करोड़ों सूर्यों का एक सघन जमघट है, जो एक स्तम्भनुमा है जिसके चारों ओर सभी सूर्य चक्कर लगाते हैं। हमारा सूर्य अपने परिवार के साथ केन्द्र का एक चक्कर 22½ (साढ़े बाईस) करोड़ साल में लगाता है और हमारा सूर्य, केन्द्र से 32,000 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। (एक प्रकाश वर्ष = 94 खरब कि०मी०) तथा हमारी आकाश गंगा की लम्बाई 1,00,000 (एक लाख) प्रकाश वर्ष है। केन्द्र के पास ही एक और प्रकाश लोक है जो ध्रुव तारे के आस-पास है। इन दोनों प्रकाश लोकों को क्रमश: शिव लोक एवम् विष्णु लोक कह सकते हैं तथा पूरी आकाश गंगा को स्वर्ग लोक कहा जाता है। स्वर्ग लोक अर्थात् वह प्रकाश लोक जहाँ पर देवता रहते हैं।

देवता उसे कहते हैं, जो स्वयम् प्रकाशमान हो तथा हमारे जीवन को प्रभावित करते हों और निष्काम भाव से अहर्निश हमारी सेवा करते हों अर्थात् जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश, तेज (सूर्य), चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि। हमारी आकाश गंगा को अनुमान से काट कर देखा जाये तो जो चित्र बनता है उसकी शक्ल बहुत कुछ "ॐ" की शक्ल से मिलती-जुलती है। आकाश गंगा के केन्द्र स्तम्भ में कुल आकाश गंगा का 2/3 Mass है और यह आकाश गंगा के दोनों फलकों का Cantilever की भाँति संतुलन बनाए रखता है, अर्थात् भगवान शिव आकाश गंगा को अपने मस्तक पर धारण किए रहते हैं।

6. शिव लोक एवम् विष्णु लोक :– अनुमान है, कि शिव लोक में एवम् विष्णु लोक में क्रमशः Nutrons का तथा Protons का भारी मात्रा में जमाव है। इस प्रकार यदि ध्यान से देखें तो हमारी आकाश गंगा की बनावट एक अणु की रचना से पूरी तरह से मेल खाती है। जिस प्रकार नाभी में Nutron तथा Proton स्थित रहते हैं और Electron इस अणु के चारों ओर 600 Trillion miles/Second की की गति से चक्कर लगा रहा होता है, उसी प्रकार की रचना इस विराट पुरुष की भी होनी चाहिए, इससे इस सिद्धान्त को पूरा बल मिलता है, कि जैसा अणु में है अर्थात् सृष्टि की सबसे छोटी इकाई में जैसा है ठीक वैसा ही बड़ी इकाई (विराट पुरुष) यानि आकाश गंगा में भी है। अर्थात् "**यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे**" का सिद्धान्त वैदिक धर्म के महानतम सिद्धान्तों में से एक है।

7. परब्रह्म का स्वरूप :– उपरोक्त सृजन का परिणाम यह हुआ, कि आकाश गंगा में निहित अरबों खरबों सूर्यों के कारण एक तो अपरिमित प्रकाश की उत्पत्ति हुई तथा अनाहद नाद अर्थात् सतत् बिना चोट वाले नाद "ॐ" के नाद की भी उत्पत्ति हुई। परब्रह्म की स्त्री रूपा–सत, रज, तम वाली शक्ति को पराशक्ति कहा गया। परशिव कहे गये परब्रह्म की आत्मा तथा राम एवम् कृष्ण हुये चित्त, गणेश हुये बुद्धि तथा श्री हनुमान जी हुये मन। इस प्रकार परब्रह्म के चतुष्टय की रचना का नामकरण हुआ। परब्रह्म के चित्त ने अवतार लेकर पृथ्वी पर नरलीला की – ऐसा पुराणों का कथन है, ताकि उस नरलीला को भक्त लोग गा गा कर भव सागर से आसानी से तर सकें। परशिव की पत्नी – पार्वती, राम की सीता, कृष्ण की राधा के नाम से जानी गयी। चूँकि परब्रह्म और उसकी पत्नी पराप्रकृति सृष्टि रचना में हिस्सा लेते हैं, इसीलिए उसका विस्तार उपर्युक्त रूप से बतलाया गया।

एक बात और कि परमात्मा के पास मात्र एक चित्त था, जो सतत् अनादि आकाश तत्व ही है और एक अविच्छिन्न है। इस आकाश तत्व में इंटरनेट की भाँति सृष्टि निर्माण, पालन एवम् विनाश की सभी सूचनाऐं सनातन रूप से सन्निहित थीं। इन्हीं सूचनाओं को चारों वेदों में निहित ज्ञान (जानकारी) कहा गया, जो ऋषियों ने समाधी द्वारा उस आकाश तत्व (परम तत्व) से दोहन करके प्राप्त की थीं।

8. परब्रह्म से ब्रह्म तक सृजन प्रक्रिया :– परन्तु परब्रह्म के दो चित्त क्यों ? अर्थात् राम एवम् कृष्ण। इस पर विचार करने के पूर्व यह जान लें, कि उत्पत्ति अर्थात् सृजन हेतु दो की आवश्यकता होती है – एक स्त्री तथा दूसरा पुरुष। Quantum Physics से यह जानकारी प्राप्त होती है, कि "किसी पदार्थ के निर्माण से पूर्व आकाश में प्रथम एक खास शक्ति का चुम्बक क्षेत्र (Magnetic Field) तैयार होता है और फिर उसमें घुसती हैं उस पदार्थ को निर्मित करने योग्य जानकारी (सूचनाऐं) अर्थात् मान लो, कि चूना (Calcium) का निर्माण होना है, तो एक चुम्बक का बादल तैयार होगा, जो एक खास शक्ति का होगा और फिर उसके अन्दर चूना बनाने की पूरी जानकारी सन्निहित हो जायगी, तब चूने का निर्माण हो जायगा। प्रकृति में पदार्थों का निर्माण शायद इसी प्रकार ही होता है। इस चुम्बक के सघन बादल में electron, proton एवम् nutron के अणु अपना–अपना स्थान उस सूचना (जानकारी) के गणित के अनुसार प्राप्त कर लेते हैं और फिर पूर्ण रूपेण चूने के अणुओं का सृजन हो जाता है, इसी प्रकार परब्रह्म के चित्त की कार्यशैली भी ऐसी ही होनी चाहिए अर्थात् दो से तीसरे का सृजन का होना। हो सकता है, कि राम जो (यः सर्वत्र रमते सः रामः) सर्वत्र रमण करते हैं, पूरी पूरी तरह सूचनाओं के सम्भरण का कार्य करते हों और लक्ष्मण चुम्बक क्षेत्र का। ठीक इसी प्रकार कृष्ण जो आकर्षण (यः कर्षति सः कृष्णः) क्षेत्र का कार्य करते हों और बलराम सूचनाओं का। यहाँ टीम उलट गयी है। व्यास जी ने जो ग्रंथ बनाया है वह है ही ठीक रामाण से उलट, अतएव इस स्तर पर भी उन्होंने नाम की उलट पुलट की हो तो समुचित ही है। सीधे–सादे शब्दों में श्री लक्ष्मण के अवतार बलराम को माना जाता है। परन्तु यह उलट पुलट लेखक की अपनी शैली है। वैसे जहाँ तक रूप के आकर्षण का प्रश्न है राम भी कम न थे, नाम भले ही कृष्ण जैसा न हो, सो क्या ? अतएव दो युगों में परब्रह्म के चित्त ने अवतार धारण किया सो चित्त तो एक ही था, मात्र काल भेद से नाम दो हो गये। यहाँ नोट करने की बात यह है, कि राम एवम् कृष्ण तो पृथ्वी पर अवतार धारण करने का कार्य करते हैं, परन्तु श्री वासुदेव हिरण्यगर्भ में घुस कर उस गर्भ (अण्डे) को पकाकर ब्रह्म (विराट) अर्थात् सम्पूर्ण प्रकृति की उत्पत्ति का कारण बनते हैं। (संलग्न चित्र देखिए)

9. ब्रह्म (विराट) का स्वरूप :– चूँकि परब्रह्म से सृजन की प्रक्रिया आरम्भ हुई और तमाम आकाश गंगाओं अर्थात् विराट पुरुष (ब्रह्म) का भौतिक प्रगटीकरण हुआ। इस प्रकार प्रकाश (तेज) एवम् नाद (ॐ ध्वनि) तथा न्यूट्रान्स, प्रोटॉन्स और एलाक्ट्रॉन्स का भारी मात्रा में सृजन हुआ, जिन्हें क्रमशः शिव, विष्णु एवम् ब्रह्मा की संज्ञा दी गयी। परशिव की भाँति शिव ने भी अपने शान्त, समाधिस्थ, मात्र सत्तावान, प्रकाशमान आदि गुणों को बनाए रखते हुये विराट पुरुष की आत्मा का स्थान ग्रहण किया, जिसे अहंकार कहा गया तथा आकाश गंगा के केन्द्र में प्रकाश स्तम्भ बनकर शेष आकाश गंगा के दोनों फलकों को सम्हाले रखने का कार्य किया। शिव लोक के पास ही ध्रुव तारे के आस–पास प्रोटॉन्स के अणुओं का एक नीलिमायुक्त प्रकाशमान लोक स्थित हुआ, जिसने सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति का एवम् उनके कर्मों का लेखा–जोखा रखने का तथा उन्हें कर्मों के फल के देने का कार्य किया अर्थात् Supreme Computer का कार्य किया। गंगावतरण की रूपक कथा पृथ्वी पर जीवों के सृजन हेतु प्रोटॉन्स के अवतरण की कथा है और अन्त में, इलाक्ट्रान्स ने विराट पुरुष के चारों ओर घूम घूम कर पूरी आकाश गंगा को क्रियाशील रखकर सम्पूर्ण भौतिक पदार्थों के सृजन का कार्य किया। सृजन के लिए शक्ति प्रणव से निरन्तर प्राप्त हो ही रही है। यह ब्रह्म की आवृत्ति करता हुआ ब्रह्मा पूरी

सृष्टि की काल गणना भी बनाए रख रहा है और कल्प के समय यह ब्रह्मा, विष्णु के सहित शिव में समाहित होकर विलय की प्रक्रिया को पूरी करेगा ।

10. विलय की प्रक्रिया :– प्रकृति का नियम है, कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है, अतएव यदि कोटि कोटि आकाश गंगाओं का सृजन हुआ है, तो उनकी मृत्यु भी होनी ही चाहिए । परन्तु ऐसा नहीं लगता, कि सभी आकाश गंगाएँ एक साथ ही नष्ट हो जाऐंगी और सम्पूर्ण सृष्टि में सन्नाटा छा जायगा तथा परमात्मा पूरी तरह से निद्रा की अवस्था में चला जायगा । सम्भव है, कि अलग अलग आकाश गंगाओं की आयु अलग-अलग हो, जैसा कि पृथ्वी पर भी हर प्राणी की आयु अलग अलग होती है और एक आकाश गंगा आज टूट कर विश्राम कर रही हो, तो दूसरी अन्यत्र उदय हो रही हो, क्योंकि शक्ति कभी भी नष्ट नहीं होती है, मात्र उसका रूपान्तरण एवम् स्थानान्तरण होता रहता है-ऐसा विज्ञान का सिद्धान्त है, जिसे 'Law of Conservation of energy' कहा जाता है । पिछले दिनों वैज्ञानिकों ने आकाश में दो आकाश गंगाओं की टक्कर और फिर उनकी एकीकरण की बात देखी है और हमारी आकाश गंगा में बहुत से Black Holes भी देखे हैं । हो सकता है, कि हमारी आकाश गंगा के बहुत से सूर्य ठंडे होकर जब Black holes बनकर आकाश गंगा के केन्द्र पर जा पहुँचते होंगे, तो वे फिर पुनर्जीवित न होते होंगे और अन्त में हमारी आकाश गंगा अपना 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष का कार्यकाल पूरा करके शान्त हो जायगी और तत्पश्चात् विश्राम के बाद पुनः प्रगट हो जायगी । लेकिन वह प्रगट होना उस प्रकार से नहीं होगा, जैसे पूर्व में हिरण्यगर्भ के फटने से हुआ था ।

11. त्रैतवाद का सिद्धान्त :– हिरण्यगर्भ से सारी आकाश गंगाओं की उत्पत्ति मान लेने से उनका विलय भी मानना ही पड़ेगा । इससे एक अन्य विचार को बल मिलता है, कि परमात्मा तथा प्रकृति एवम् जीव तीनों अनादि (जिनका कभी आरम्भ न हुआ हो) हैं अर्थात् तीनों अनादि अनन्त काल से हैं और रहेंगे । सम्पूर्ण प्रकृति का नाश किसी काल में नहीं होता है मात्र कुछ अंश में परिवर्तन होता रहता है । परन्तु प्रकृति स्वतन्त्र नहीं है, वह ईश्वर के अधीन है, वैसा ही जीव भी ईश्वर के आधीन है । क्योंकि ऐसा न होने पर शासन व्यवस्था में समरसता रह सकना सम्भव नहीं है, इस विचार को त्रैतवाद के नाम से कहा गया है । रामचरितमानस की कथा में वर्णन आया है, कि जब सती जी शंकर जी की आज्ञा की अवहेलना करके अपने पिता के यज्ञ महोत्सव में चली गयीं तो उनको मृत्यु का सामना करना पड़ा । बाद में जब उन्होंने पार्वती के रूप में पुनः जन्म लिया, तब श्री शंकर जी से रामकथा श्रद्धा और प्रेम से सुनकर वे अमर हो गयीं तथा श्री शंकर जी ने उन्हें अपने शरीर की अर्धांगिनी अथवा अर्धनारीश्वर के रूप में स्थान दे दिया । इस कथानक का यही अर्थ निकलता है, कि प्रकृति एवम् ईश्वर अनादि एवम् अनन्त हैं और प्रकृति, ईश्वर के अनुशासन के अधीन रहती है तथा ईश्वर प्रकृति पर काल द्वारा अनुशासन स्थापित रखता है ।

12. द्वैतवाद एवम् अद्वैतवाद का सिद्धान्त :– कुछ आचार्य द्वैतवाद के समर्थक हैं । उनका कहना है, कि प्रकृति एवम् ईश्वर दो की स्वतंत्र सत्ता है तथा जीव तो ईश्वर का अंश होने से अलग सत्ता वाला नहीं माना जाना चाहिए । फिर जीव तो प्रकृति द्वारा नचाया जाता रहता है तथा बन्धन में भ्रमित रहता ही है अतएव द्वैतवाद का सिद्धान्त उचित और मान्य होना चाहिए । जीव Proton से अर्थात् प्रकृति से उत्पन्न है और शिव (अहंकार) के प्रकाश से स्पन्दित होने पर वह जीवात्मा बनता है । अन्त में, Proton से छुटकारा पाने पर प्रकृति से मुक्ति मिल जाती है, तब वह ईश्वर में मिल जाता है । परन्तु प्रकृति को स्वतन्त्र मान लेने से अनुशासन रह सकना सम्भव नहीं है । उसे अनुशासन तोड़ने पर काल का डर तो रहना ही चाहिए । **परन्तु यदि परमात्मा स्वयंभू है तो प्रकृति भी स्वयंभू हुई, क्योंकि दोनों स्वतन्त्र सत्ता हैं, जो सम्भव नहीं है, क्योंकि यदि दो-दो शक्तियाँ स्वयंभू हों, तो उनका मिलकर कार्य करना सम्भव नहीं है । अतएव प्रकृति (शक्ति) परमात्मा के शरीर से उत्पन्न ईश्वर की ही शक्ति है और पूर्णरूप से ईश्वर के आधीन रहती है । इस सिद्धान्त को अद्वैत सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है । परम पूज्य आदि शंकराचार्य जी ने इसी सिद्धान्त को अन्तिम रूप से प्रतिपादित किया था ।**

एक बात और है, कि सारी की सारी आकाश गंगाऐं अनन्त की ओर भागी जा रही हैं, ऐसा सम्भव नहीं है, बल्कि ऐसा अधिक उपयुक्त लगता है, कि वे सभी की सभी किसी विशिष्ट केन्द्र का चक्कर लगा रही हैं, जैसा कि हर आकाश गंगा में उसके अवयव (सौर परिवार) चक्कर लगाते हैं । कुछ चिन्तकों का विचार है, कि सृजन की प्रक्रिया के बाद Retraction (सिमटने) की प्रक्रिया भी अवश्य होना चाहिए, क्योंकि हिरण्यगर्भ से विस्फोट के बाद वे फैलती (Expand) जा रही है । वास्तव में, विस्फोट के बाद वे किसी केन्द्र का चक्कर ही लगा रही हैं, फैल नहीं रही हैं । लेकिन अन्तिम स्थिति पूर्व वाली अधिक सही लगती है, कि हिरण्यगर्भ वाली बात काल्पनिक है । प्रकृति, ईश्वर एवम् जीव अनादि हैं और सदैव चलते रहे हैं तथा चलते रहेंगे । उनके सिमटने का प्रश्न ही नहीं है । आकाश गंगा विशिष्ट का अपनी अपनी आयु पूर्ण करके विलय होने का विचार अधिक उपयुक्त लगता है और सम्भव है, कि विलय की प्रक्रिया सभी सूर्यों के Black holes बनकर केन्द्र पर चिपक जाने से और तब सभी Electrons को Protons सहित Nutrons में समाहित होने से पूर्ण होती हों, वही उस आकाश गंगा का कार्यकाल है । शायद वे जीव जो मुक्ति पा जाते हों, वे भी केन्द्र में आकर चिपक जाते हों, शेष जो वृत्त में हैं उन्हें तब तक चक्कर लगाना ही है, जब तक वे उस शक्ति स्पन्दन तक नहीं पहुँच जाते, जहाँ से वे केन्द्र में स्थित Nutrons से निर्मित प्रकाश स्तम्भ पर चिपक सकें अर्थात् परशिव में लीन हो सकें।

निवेदन :– पाठकों से निवेदन है कि अपने विचार अवश्य लिख कर भेजें, जिसके लिए लेखक आप सभी का अग्रिम धन्यवाद करता है ।

भवदीय

परिभाषाएं:–

ब्रह्माण्ड – सूर्य के चारों ओर अण्डाकार पथ पर घूमते ग्रह जो एक बड़े (बृहद्) अण्डे की शक्ल बनाते हैं ।

विश्व – हमारी आकाश गंगा अथवा मन्दाकिनी जिसमें लगभग एक खरब सूर्य हैं उनमें अनेक सूर्य अपने परिवार के साथ बड़े अण्डे की शक्ल बनाते हैं तथा अनेक एकाकी समूहों में रहते हैं ।

विराट विश्व (Cosmos) – सभी अरबों मन्दाकिनियों का समूह ।

शुभम् भुयात् !

डा० अवधबिहारी लाल गुप्ता
बी-340, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली-110034. फोन : 7184145

सृष्टि की काल गणना भी बनाए रख रहा है और कल्प के समय यह ब्रह्मा, विष्णु के सहित शिव में समाहित होकर विलय की प्रक्रिया को पूरी करेगा ।

10. विलय की प्रक्रिया :– प्रकृति का नियम है, कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है, अतएव यदि कोटि कोटि आकाश गंगाओं का सृजन हुआ है, तो उनकी मृत्यु भी होनी ही चाहिए । परन्तु ऐसा नहीं लगता, कि सभी आकाश गंगाएँ एक साथ ही नष्ट हो जाऐंगी और सम्पूर्ण सृष्टि में सन्नाटा छा जायगा तथा परमात्मा पूरी तरह से निद्रा की अवस्था में चला जायगा । सम्भव है, कि अलग अलग आकाश गंगाओं की आयु अलग-अलग हो, जैसा कि पृथ्वी पर भी हर प्राणी की आयु अलग अलग होती है और एक आकाश गंगा आज टूट कर विश्राम कर रही हो, तो दूसरी अन्यत्र उदय हो रही हो, क्योंकि शक्ति कभी भी नष्ट नहीं होती है, मात्र उसका रूपान्तरण एवम् स्थानान्तरण होता रहता है–ऐसा विज्ञान का सिद्धान्त है, जिसे 'Law of Conservation of energy' कहा जाता है । पिछले दिनों वैज्ञानिकों ने आकाश में दो आकाश गंगाओं की टक्कर और फिर उनकी एकीकरण की बात देखी है और हमारी आकाश गंगा में बहुत से Black Holes भी देखे हैं । हो सकता है, कि हमारी आकाश गंगा के बहुत से सूर्य ठंडे होकर जब Black holes बनकर आकाश गंगा के केन्द्र पर जा पहुँचते होंगे, तो वे फिर पुनर्जीवित न होते होंगे और अन्त में हमारी आकाश गंगा अपना 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष का कार्यकाल पूरा करके शान्त हो जायगी और तत्पश्चात् विश्राम के बाद पुनः प्रगट हो जायगी । लेकिन वह प्रगट होना उस प्रकार से नहीं होगा, जैसे पूर्व में हिरण्यगर्भ के फटने से हुआ था ।

11. त्रैतवाद का सिद्धान्त :– हिरण्यगर्भ से सारी आकाश गंगाओं की उत्पत्ति मान लेने से उनका विलय भी मानना ही पड़ेगा । इससे एक अन्य विचार को बल मिलता है, कि परमात्मा तथा प्रकृति एवम् जीव तीनों अनादि (जिनका कभी आरम्भ न हुआ हो) हैं अर्थात् तीनों अनादि अनन्त काल से हैं और रहेंगे । सम्पूर्ण प्रकृति का नाश किसी काल में नहीं होता है मात्र कुछ अंश में परिवर्तन होता रहता है । परन्तु प्रकृति स्वतन्त्र नहीं है, वह ईश्वर के अधीन है, वैसा ही जीव भी ईश्वर के आधीन है । क्योंकि ऐसा न होने पर शासन व्यवस्था में समरसता रह सकना सम्भव नहीं है, इस विचार को त्रैतवाद के नाम से कहा गया है । रामचरितमानस की कथा में वर्णन आया है, कि जब सती जी शंकर जी की आज्ञा की अवहेलना करके अपने पिता के यज्ञ महोत्सव में चली गयीं तो उनको मृत्यु का सामना करना पड़ा । बाद में जब उन्होंने पार्वती के रूप में पुनः जन्म लिया, तब श्री शंकर जी से रामकथा श्रद्धा और प्रेम से सुनकर वे अमर हो गयीं तथा श्री शंकर जी ने उन्हें अपने शरीर की अर्धांगिनी अथवा अर्धनारीश्वर के रूप में स्थान दे दिया । इस कथानक का यही अर्थ निकलता है, कि प्रकृति एवम् ईश्वर अनादि एवम् अनन्त हैं और प्रकृति, ईश्वर के अनुशासन के अधीन रहती है तथा ईश्वर प्रकृति पर काल द्वारा अनुशासन स्थापित रखता है ।

12. द्वैतवाद एवम् अद्वैतवाद का सिद्धान्त :– कुछ आचार्य द्वैतवाद के समर्थक हैं । उनका कहना है, कि प्रकृति एवम् ईश्वर दो की स्वतंत्र सत्ता है तथा जीव तो ईश्वर का अंश होने से अलग सत्ता वाला नहीं माना जाना चाहिए । फिर जीव तो प्रकृति द्वारा नचाया जाता रहता है तथा बन्धन में भ्रमित रहता ही है अतएव द्वैतवाद का सिद्धान्त उचित और मान्य होना चाहिए । जीव Proton से अर्थात् प्रकृति से उत्पन्न है और शिव (अहंकार) के प्रकाश से स्पन्दित होने पर वह जीवात्मा बनता है । अन्त में, Proton से छुटकारा पाने पर प्रकृति से मुक्ति मिल जाती है, तब वह ईश्वर में मिल जाता है । परन्तु प्रकृति को स्वतन्त्र मान लेने से अनुशासन रह सकना सम्भव नहीं है । उसे अनुशासन तोड़ने पर काल का डर तो रहना ही चाहिए । **परन्तु यदि परमात्मा स्वयंभू है तो प्रकृति भी स्वयंभू हुई, क्योंकि दोनों स्वतन्त्र सत्ता हैं, जो सम्भव नहीं है, क्योंकि यदि दो–दो शक्तियाँ स्वयंभू हों, तो उनका मिलकर कार्य करना सम्भव नहीं है । अतएव प्रकृति (शक्ति) परमात्मा के शरीर से उत्पन्न ईश्वर की ही शक्ति है और पूर्णरूप से ईश्वर के आधीन रहती है । इस सिद्धान्त को अद्वैत सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है । परम पूज्य आदि शंकराचार्य जी ने इसी सिद्धान्त को अन्तिम रूप से प्रतिपादित किया था ।**

एक बात और है, कि सारी की सारी आकाश गंगाऐं अनन्त की ओर भागी जा रही हैं, ऐसा सम्भव नहीं है, बल्कि ऐसा अधिक उपयुक्त लगता है, कि वे सभी की सभी किसी विशिष्ट केन्द्र का चक्कर लगा रही हैं, जैसा कि हर आकाश गंगा में उसके अवयव (सौर परिवार) चक्कर लगाते हैं । कुछ चिन्तकों का विचार है, कि सृजन की प्रक्रिया के बाद Retraction (सिमटने) की प्रक्रिया भी अवश्य होना चाहिए, क्योंकि हिरण्यगर्भ से विस्फोट के बाद वे फैलती (Expand) जा रही है । वास्तव में, विस्फोट के बाद वे किसी केन्द्र का चक्कर ही लगा रही हैं, फैल नहीं रही हैं । लेकिन अन्तिम स्थिति पूर्व वाली अधिक सही लगती है, कि हिरण्यगर्भ वाली बात काल्पनिक है । प्रकृति, ईश्वर एवम् जीव अनादि हैं और सदैव चलते रहे हैं तथा चलते रहेंगे । उनके सिमटने का प्रश्न ही नहीं है । आकाश गंगा विशिष्ट का अपनी अपनी आयु पूर्ण करके विलय होने का विचार अधिक उपयुक्त लगता है और सम्भव है, कि विलय की प्रक्रिया सभी सूर्यों के Black holes बनकर केन्द्र पर चिपक जाने से और तब सभी Electrons को Protons सहित Nutrons में समाहित होने से पूर्ण होती हों, वही उस आकाश गंगा का कार्यकाल है । शायद वे जीव जो मुक्ति पा जाते हों, वे भी केन्द्र में आकर चिपक जाते हों, शेष जो वृत्त में हैं उन्हें तब तक चक्कर लगाना ही है, जब तक वे उस शक्ति स्पन्दन तक नहीं पहुँच जाते, जहाँ से वे केन्द्र में स्थित Nutrons से निर्मित प्रकाश स्तम्भ पर चिपक सकें अर्थात् परशिव में लीन हो सकें।

निवेदन :– पाठकों से निवेदन है कि अपने विचार अवश्य लिख कर भेजें, जिसके लिए लेखक आप सभी का अग्रिम धन्यवाद करता है ।

भवदीय

परिभाषाएं:–

ब्रह्माण्ड – सूर्य के चारों ओर अण्डाकार पथ पर घूमते ग्रह जो एक बड़े (वृहद्) अण्डे की शक्ल बनाते हैं ।

विश्व – हमारी आकाश गंगा अथवा मन्दाकिनी जिसमें लगभग एक खरब सूर्य हैं उनमें अनेक सूर्य अपने परिवार के साथ बड़े अण्डे की शक्ल बनाते हैं तथा अनेक एकाकी समूहों में रहते हैं ।

विराट विश्व (Cosmos) – सभी अरबों मन्दाकिनियों का समूह ।

शुभम् भुयात् !

डा० अवधबिहारी लाल गुप्ता
बी–340, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली–110034. फोन : 7184145

EMISSION OF ELECTROMAGNETIC WAVES

FISSION OF ATOM